चित्रायन

GARGI COLLEGE

विद्यया अमृतं अश्नुते

गार्गी महाविद्यालय

हिन्दी साहित्य परिषद

2021-22

हिन्दी साहित्य परिषद
गार्गी कॉलेज

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि ।

यह हर्ष का विषय है कि गार्गी कॉलेज हिंदी विभाग अपनी वार्षिक पत्रिका ' विचारायन' के नये अंक का प्रकाशन कर रहा है। पत्रिका का नियमित प्रकाशन हिंदी के प्रचार - प्रसार व पुस्तक पठन संस्कृति को बढ़ावा देता है। छात्राओं की प्रतिभा को निखारने के लिए एवं उनकी रचनात्मक क्षमता की अभिवृद्धि के लिए 'विचारायन' पत्रिका का प्रकाशन इस दिशा में एक सराहनीय कदम है। पूर्व की भांति पत्रिका का यह अंक उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा, ऐसी मेरी कामना है। 'विचारायन' पत्रिका के इस अंक के लिए मैं प्यारे विद्यार्थियों को, हिंदी विभाग को तहेदिल से अपनी शुभकामनाएं देती हूं।

प्रो. प्रोमिला कुमार
प्राचार्या
गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में गार्गी महाविद्यालय हिंदी विभाग अपनी वार्षिक ई–पत्रिका विचारायन के नए अंक का प्रकाशन कर रहा है| पत्रिका के इस तृतीय नवीनतम अंक को आपके सम्मुख रखते हुए मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है । विद्यार्थियों ने प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक आलेखों के माध्यम से हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना साहित्यिक योगदान देकर पत्रिका की गरिमा को बढ़ाया है । इस अंक की सफलता के लिए मैं अपने प्यारे विद्यार्थियों का हृदय से धन्यवाद करती हूं और अपनी शुभकामनाएं देती हूं कि भविष्य में भी साहित्यिक विषयों पर अपनी रचनात्मक भागीदारी इसी प्रकार बनाए रखें । पत्रिका को और अधिक बेहतर बनाने हेतु आप सभी के बहुमूल्य सुझावों और मनोभावों का सदेव स्वागत रहेगा| इन्ही मंगल शुभकामनाओं के साथ एक बार पुनः आप सभी का बहुत-बहुत आभार ।

शुभकामनाओं सहित

डॉ. मीना (संपादक)

हिंदी साहित्य परिषद

हिंदी विभाग की पत्रिका 'विचारायन' के नए वार्षिक अंक पूर्ण होने की बधाई ! इस पत्रिका के सफल संपादन के लिए डॉ. मीना जी एवं सम्पादक मण्डल का प्रयास सराहनीय रहा ।

भारतीय ज्ञान और संस्कारों का आधार हिंदी भाषा रही है । सदियों से हिंदी भाषा में रचित विविध ग्रंथ भारतीय जनमानस को नयी दिशा दे रहे हैं । यह हर्ष का विषय है कि आज तकनीक का उपयोग करते हुए हिंदी अधिकाधिक लोगों तक पहुँच रही है और विश्वभर में हिंदी के प्रति लोगों की रुचि बढ़ी है । 'विचारायन' पत्रिका में छपे विविध साहित्य विधाओं के माध्यम से इस सुमधुर भाषा के विभिन्न आयामों को पाठकों तक पहुँचाने की पहल अतुलनीय है ।

मुझे उम्मीद है कि 'विचारायन' पत्रिका सभी हिंदी प्रेमियों को अपने साथ जोड़ते हुए हिंदी की लोकप्रियता बढ़ाने में इसी ऊर्जा और उत्साह के साथ पाठकों तक निरंतर पहुँचती रहेगी। 'विचारायन' पत्रिका के तीन वर्ष पूर्ण होने के शुभ अवसर पर गार्गी महाविद्यालय के हिंदी विभाग के समस्त शिक्षकगण एवं छात्राओं को बधाई एवं शुभकामनाएँ |

डॉ. कृष्णा मीणा
विभाग प्रभारी, हिंदी विभाग
गार्गी कॉलेज

गार्गी कॉलेज के हिंदी विभाग की सभी छात्राओं को फूलों की माला की तरह एकता के सूत्र में पिरो कर रखने वाली विभागीय पत्रिका 'विचारायन' को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रही हूं।

जिस प्रकार अलग-अलग संस्कृतियों एवं अन्य विविधताओं के आदान-प्रदान के लिए एक सामान्य सूत्र भाषा की आवश्यकता होती है उसी प्रकार सहज एवं सरल शैली के कारण हिंदी सूत्र भाषा का बखूबी निर्वहन कर रही है।

'विचारायन' पत्रिका के सरल शैली के कारण यह हमारी अभिव्यक्ति संप्रेषण का भी एक अहम स्रोत है। विभाग की छात्राओं को अपनी अभिव्यक्ति संप्रेषण एवं साहित्यिक अभिरुचि को सफल बनाने के लिए विचारायन एक मंच प्रदान कर रही है। पत्रिका के प्रकाशन में माननीय डॉ. मीना मैम जी का जो सहयोग एवं प्रेरणा मिली है उसके लिए मैं तहेदिल से आभार प्रकट करती हूं। पत्रिका के सभी रचनाकार एवं लेखक साधुवाद के पात्र हैं जिन्होंने अपनी लेखनी एवं विचारों के माध्यम से पत्रिका को अलंकृत करने में योगदान दिया। भविष्य में भी आप सभी के सहयोग की अपेक्षा के साथ...

मुझे पूर्ण विश्वास है कि विविधता में एकता को दर्शाने वाली यह पत्रिका अपने बहुआयामी दायित्व में पूर्णरूपेण सफल होगी।

पत्रिका की सफलता मेरी शुभकामनाएं..

बबली शर्मा (तृतीय वर्ष)

अध्यक्षा

हिंदी साहित्य परिषद

शिक्षक गण

1.डॉ मीना
2.डॉ श्रीनिवास त्यागी
3.डॉ वीणा शर्मा
4.डॉ अनीता यादव
5.डॉ स्वाति श्वेता
6.डॉ पार्वती शर्मा
7.डॉ कृष्णा मीणा
8.डॉ संतोष कुमार भारद्वाज
9.डॉ सुनील कुमार वर्मा
10.डॉ आरती पाण्डेय

संपादक मंडल

1.बबली शर्मा
2.अस्मिता सुमन
3.सुमन
4.शिवानी गुसाईं

छात्र संघ **2021-22**

1.अध्यक्ष - बबली शर्मा
2.उपाध्यक्ष - लतिका शर्मा
3.महासचिव - तानिया
4.सांस्कृतिक सचिव- साक्षी मिश्रा
5.कुलानुशासक - तान्या सिंह
6.कोषाध्यक्ष - अमीषा

शिक्षक-गण

डॉ मीना

डॉ श्रीनिवास त्यागी

डॉ वीणा शर्मा

डॉ अनीता यादव

डॉ स्वाति श्वेता

डॉ पार्वती शर्मा

डॉ कृष्णा मीणा

डॉ संतोष कुमार भारद्वाज

डॉ सुनील कुमार वर्मा

डॉ आरती पाण्डेय

अनुक्रमणिका

स.	नाम	विषय	पृष्ठ सं
1.	लवली अप्राजिता	सुकूँ	12
2.	नियाशा	परिंदे	13
3.	आरती	मैं और सिर्फ़ मैं	14
4.	पूर्णिमा सैनी	जुदा ना होना	15
5.	हिमांशी	आज खून में लत–पत	16
6.	शिवानी	जलियांवाला बाग	17
7.	आशु कुमारी	संघर्ष–ए–वक्त	18
8.	मधु माला	औरत	19
9.	दामिनी तिवारी	आजादी की अमृत आवाज	20
10.	प्रियंका सिंह	दोस्ती	21
11.	गीतिका	औरत हूं मैं	22
12.	तपस्या यादव	कोई ऐसा नहीं जो रोक सके तुम्हें	23
13.	कुसुम लता	कर्मचक्र	24-25
14.	पूजा	किताब होती	26
15.	काजल कुमारी	जिल्लत भरी जिंदगी	27
16.	रिचा कुमारी	मैं हूं रखवाला	28
17.	एकता	पाबंदियां	29
18.	प्रियांशी दुबे	मुझे मेरी उड़ान दो	30

स.	नाम	विषय	पृष्ठ सं
19.	शान्या दास	हिंदी के धूमिल अस्तित्व को समेटने की आवश्यकता और उपाय	31-33
20.	खुशी	हम एक साथ हैं	34
21.	सोनम यादव	लड़कियों का एक संघर्ष	35
22.	जिज्ञासा पाण्डेय	मैं कलरव हूं	36
23.	प्रेरणा झा	औरत हूं मैं	37
24.	निकिता मिश्रा	उलझन	38
25.	वैष्णवी राय	आजादी का रंग	39
26.	सुरुचि	कोरोना की दहशत (प्रकोप, कहर)	40
27.	शिल्पा	जवान	41
28.	सृष्टि यादव	मैं एक कविता	42
29.	सुमन	जब होंगे ख़्वाब एक	43
30.	आयशा खान	गणतंत्र दिवस	44
31.	साक्षी मिश्रा	बलात्कार	45
32.	तान्या सिंह	डर	46
33.	मायना	खुश रहो	47
34.	नीता पाल	आयु में परिवर्तन और मेरे माता पिता	48

सुकूँ

आज सारी रात करवटे बदलते देखा ,
नींद कुछ गायब थी ।
आंखों में परेशानी की छाया
पर आंसू की एक झलक न थी ।
शायद गुम था कहीं सुकूँ
या भीड़ में तन्हा सी थी
खुशी जो बचपन में थी
समय के तराजू में कहीं कम सी थी ।
करवटे बदल कर देखा तो पता चला
नींद गायब सी थी ।

लवली अप्राजिता
प्रथम वर्ष

परिंदे

दूर कहीं ऊंचाइयों तक उड़ने की चाह रखना
आसमां को अपना दोस्त बनाकर उन हवाओं से बातें
करना...
चहचहाते हुए अपनी आवाज़ का गुंजन करना
सीख रहे हैं आजकल हम इन परिंदो से इनकी भाषा में
बात करना...
क्योंकि चाहत भी कुछ ऐसी है जनाब...
कि इनके बिना मुश्किल सा लग रहा था,
आज़ाद एक पक्षी बनना...
यकीन मानो इस बात का बहुत कुछ सीखा रहे हैं ये परिंदे
हमें आजकल,
वरना हम में कहां इतना साहस था जनाब...
जो ये भी कह देते के...आता है हमें अपने ख्वाबों की
ऊंची उड़ान भरना...
कुछ यूं सिख रहे हैं आजकल इन परिंदों से जनाब इनकी
तरह जिंदगी बसर करना...

नियाशा
प्रथम वर्ष

मैं और सिर्फ मैं

हरी नहीं हूं मैं
बस कुछ चोट है खाई ,

चल दूंगी मैं इन हवाओं के साथ
ये बरसात जो आई,

आंसू न गिराऊगी मैं
अपनी तकलीफ़ को बया न कर पाऊंगी मैं,

खामोश हो जाऊंगी मैं
पढ़ सको तो पढ़ लेना मुझे
नहीं तो चली जाऊंगी मैं,

बातों के बाजार में छुप जाऊंगी मैं
तुम सबके छल को न देख पाऊंगी मैं,

इस बेज़ार जिंदगी में अपना
किसी को न कह पाऊंगी मैं,

इस अंधेर नगरी में नहीं रह पाऊंगी मैं
उस परलोक में चली जाऊंगी मैं,

जहां कोई न ढूंढ पाए
वहां पर ही खुद को पाऊंगी मैं।

आरती
प्रथम वर्ष

जुदा ना होना

मैं वतन पर मिटने वाले को सलाम करती हूँ
जुदा ना करना उनको परिवार से, यही फरियाद करती हूँ।
बर्फीले पहाड़ों पर करते पहरेदारी,
देश के असली सेवक है, जिनके कंधो पर रक्षा की जिम्मेदारी,
है भरोसा इन पर, प्रार्थना इनकी दिन रात करती हूँ,
जुदा ना करना उनको परिवार से यही फरियाद करती हूँ।

कोविड - 19 आने पर सब कोरोना - कोरोना गाते,
पर भीड़ - भाड़ वाली जगह पर मास्क भी नहीं लगाते,
ऑनलाइन क्लास लगने लगी, सरकार की है लाचारी,
मोबाईल से पढ़ाई कर - कर के आँखे हो गई खराब सारी,
जुदा ना करना उनको परिवार से यही फरियाद करती हूँ।
गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर हम संकल्प लेते हैं,
मिल - जुलकर रहना और मदद एक - दूसरे की दिल से करतें हैं,
यदि परछाई छोड़ कर बापू चले गए,
अब्दुल कलाम को नमन और सलाम करती हूँ,
जुदा ना करना परिवार से यही फरियाद करती हूँ।
कोरोना से दुनिया मर रही, चल रहा चुनावी दंगा,
नेताओ से कह दो ! कोविड से ना लेना पंगा,
नहीं तो ओमीक्रोन - डेल्टा दोनों भाई, चुनाव के बाद मचा देंगे तबाही,
बस अब यहीं मैं अपनी बात को विराम करती हूँ,
जुदा ना करना उनको परिवार से, यही फरियाद करती हूँ ।

पूर्णिमा सैनी
प्रथम वर्ष

आज खून में लत-पत

आज खून में लत-पत है वो,
आज बॉडर पर तैनात है जो।

बिना जान की परवाह किए
सीने तान के खड़े हैं जो।

ना आज का डर,
ना कल की फिक्र जिनको।

आज करतें हैं हम सलाम उनको,
कहलाते हैं वीर सेनानी जो।

किसी माँ के आँखों में आज आँसू,
किसी बहन की सुनी है राखी आज।

किसी की बीबी का सिन्दूर उजड़ा,
किसी के सर से बाप का छाया।

आज फिर खड़े है सरहद पे जो,
आज फिर खून में लत-पत है वो।

आजादी के प्रहरी है वो,
श्रद्धा-सुमन के अधिकारी हैं वो।

मस्तिष्क झुकाकर करतें हैं नमन,
आज करतें हैं सलाम उनको।।

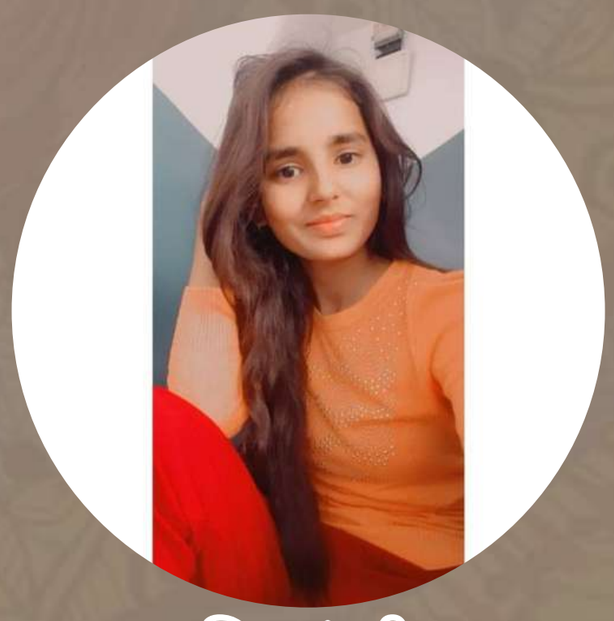

हिमांशी
प्रथम वर्ष

जलियांवाला बाग

वो मंजर बड़ा भयानक था,बस सोच मात्र से रूह कांप जाती है।
"जलियांवाला बाग" का जिक्र भी हो तो, क्रांतिकारियों की
कुरबानी याद आती है।
बैसाखी के पावन पर्व पर, एक राक्षस ने आतंक मचाया था।
कहने को तो ब्रिगेडियर डायर था, पर उस दिन अपनी नंपुसकता
का परचम लहराया था।
हज़ारों निहत्थों पे लगातार 10 मिनट तक गोलियां चलवाया था।
सनकी क्रूर और कायर होने का खुद प्रमाण दिखाया था।
अरे उन अत्याचारियों ने तो मासूम बच्चों को भी नहीं छोड़ा था।
कितने निर्दोष लोगों ने डर से कुआं में कूद के दम तोड़ा था।
कुछ लोग दीवार फांद के अपनी जान बचाना चाहते थे।
और कुछ तो अपने मां बाप के पास जाना चाहते थे।
पता नही उस दिन मां ने कितने बेटे खोए थे।
पता नहीं कितने बच्चें मां बाप के लिए रोए थे।
आज जिसकी बदौलत देश में अमन है।
उन क्रांतिकारियों को शत् शत् नमन।

शिवानी
प्रथम वर्ष

संघर्ष- ए- वक्त

मन की उलझन समझने में वक्त लगता है
और,

मन की उलझन सुलझाने में भी वक्त
लगता है ,

तभी कहते हैं, वक्त को भी वक्त लगता है ।

जिंदगी के हर मोड़ पर दो राहें हैं, उन राहों
में से एक को चुनने में वक्त लगता है।

कौन-सी सही ? कौन-सी गलत ? यह तय
करने में वक़्त लगता है।

तभी कहते हैं, वक्त को भी वक्त लगता है ।

अब तुझे इस वक्त में संघर्ष से लड़ जाना
है।

अब तुझे इस वक्त को भी अपना बनाना
है।

इस वक्त में फंसी जंजीरों को तोड़ना है।

आशु कुमारी
प्रथम वर्ष

तुझे इस वक्त में भी अपना वक्त ढूंढना है।

औरत

क्यों रास्तें पर चलें तो, कोई छेड़ देता है?
क्यों पति से कुछ कहे भी तो, हाथ मरोड़ देता है?
क्यों उम्मीद के बदले, तुझे बस मिलती है निराशा?
क्यों खुशियों से भरा घर, लगता है एक झूठी आशा?

मधु माला
प्रथम वर्ष

खुलकर हँसो तो कोई टोक देता है,
बेफिक्र जियो तो कोई रोक देता है।
देख... फिर वही सुबह आई,
जो उसके लिए किरण और तेरे लिए परछाई।

क्यों तोड़े कभी सपने तो कभी दिल को?
ए-दुनिया कोशिश तो कर
समझने की एक औरत को।

रोज़ न सही, जन्मदिन या सालगिरह पर ही हँसने दिया
कर।
बिन पूछे दो बात ही कर लिया कर।
अपने हाथ की एक कप चाय पिलाकर कभी चौंका ही
दिया कर।

आजादी की अमृत आवाज

आज़ादी मीठे सरगम की धुन सी है
जिसने पूरे संसार को एक धागे में पिरोया है

इसके लिए न जाने कितने लोगों ने
अपने घर परिवार को खोया है

जाति-पाति, छुआ- छूत से बढ़कर
इसने समानता को अपना धर्म बताया है

धरती के कण- कण से लेकर
इस नभ गगन तक
आज़ादी का परचम फहराया है

तब जाकर हमने आज़ादी का यह राग
गुन-गुनाया है...

दामिनी तिवारी
प्रथम वर्ष

दोस्ती

फिर से बच्चा बनने को दिल चाहता है!
खुली किताब पढ़ने को दिल चाहता है!
क्यों हम यू बड़े हो गए;
दिल वापस बचपन में आना चाहता है!
सच्ची थी उस वक्त की बातें
सच्चा था वो खिलौनों से खेलना
ना मतलब के दोस्त होते थे!
ना मतलब की दोस्ती
बस एक बात थी कहनी
बचपन तो बचपना था!
वो अपना याराना था
वो दिन बहुत पुराना था
वो फूल से प्यारे हाथ थे
वो अपना दिल बचकाना था
नादान थी सारी गलतियां
और वो भोला सा मुस्काना था
गलती पर हम डरते थे
फिर भी वही गलती हम रोज़ करते थे
इन लब्जो की एक ठिठोली थी
वो तो अपने यारो की टोली थी
हां ,वो दिन बहुत पुराने थे
पर वो दिन ही सबसे प्यारे थे
वो बचपन वाले दिन थे
और वो ही सबसे न्यारे थे
अब फिर से मुझे बच्चा बना दो
क्योंकि मैं बच्चा ही प्यारा था ।

प्रियंका सिंह
प्रथम वर्ष

औरत हूं मैं

औरत से ही नाम है,
औरत से ही घर का निर्माण है,
लेकिन क्यों नही मिला,
उसे सम्मान है|
वो भी तो इंसान हैं! वो भी तो इंसान हैं!
ऐसा वो नाम है,
जिसका ईश्वर भी करे सम्मान है,
जो प्रकृति का वरदान है,
जो अपना जीवन कर देती,
परिवार को दान हैं|
जो निभाए भरपूर अपना काम है,
लेकिन क्यों नही मिला,
उसे सम्मान है|
वो भी तो इंसान हैं! वो भी तो इंसान हैं!
वही इतिहास, वर्तमान और काल है,
वही देवता का वरदान है,
लेकिन क्यों नही मिला,
उसे सम्मान है|
वो भी तो इंसान हैं! वो भी तो इंसान हैं!

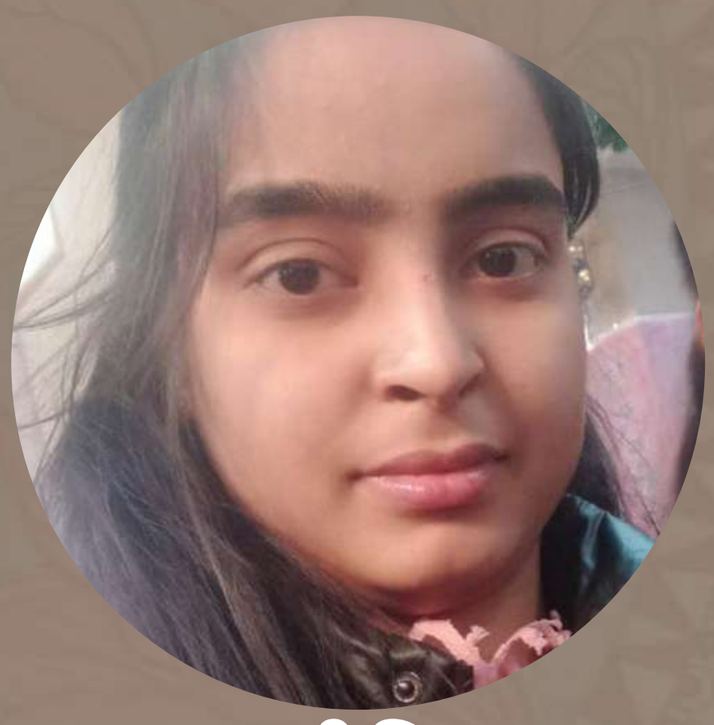

गीतिका
प्रथम वर्ष

कोई ऐसा नहीं जो रोक सके तुम्हें

ठान ले अगर, कोई हौसला बुलंद, तो
कोई ऐसा नहीं जो रोक सके तुम्हें।

तुम इस राह पर चलना शुरू क्यों किए थे?
यह वजह मजबूत है तुम्हारी, तो
कोई ऐसा नहीं जो रोक सके तुम्हें।

हुक्मरान कितने ही आए और गए,
गर आजाद हो तुम इनसे, तो
कोई ऐसा नहीं जो रोक सके तुम्हें।

पतझड़ हो, या हो सावन,
अगर फर्क ना पड़े तुम्हें, तो
कोई ऐसा नहीं जो रोक सके तुम्हें।

तपस्या यादव
प्रथम वर्ष

अर्जून सा निशाना रखो
मन में न कोई बहाना रखो
तो कोई ऐसा नही जो रोक सके तुम्हें।

तुम हर राह, हर मंजिल पर बढ़ते चलो,
जज्बा जिंदा है कुछ कर गुजरने का, तो
कोई ऐसा नहीं जो रोक सके तुम्हें।

कभी हार न मानकर
मुसलसल, दुगनी शिद्दत से
बस आगे बढ़ते चलो,
कोई ऐसा नहीं जो रोक सके तुम्हें।

कर्मचक्र

शहर के झुग्गी - झोपडी वाले इलाके की दूसरी गली में कूड़े के ढेर के पास लोहे की टीन से बना एक चारदीवारी कमरा, जिसकी छत से पानी की बूँदे आती हैँ और बरसात का मौसम वहां रहने वाली बूढी माँ के लिए सुहानी ऋतु ना होकर भयानक दृश्य बन जाता है। दरअसल, ये बूढी माँ इन शहर की झुग्गियों में लगभग चालीस वर्षों से रह रही है। सफ़ेद धोती लपेटे , उलझे बाल, और हाथ में सहारे के लिए एक लाठी लिए हुए रोज सुबह लोगों के घर बर्तन धोने का काम करती । वहां से खाने के लिए मालकिन कुछ खाना दे देती हैँ और पहनने के लिए कुछ कपड़े । उसी में बुढ़िया माँ का गुजारा हो जाता है।

हुआ यूं , बुढ़िया माँ का एक बेटा था जो कुछ साल पहले पढ़ाई - लिखाई कर काम की खोज में प्रदेश गया हुआ था। परन्तु आज तक उसका न तो कोई पत्र आया ना वो खुद । बुढ़िया माँ रोज़ उसकी राह देखती रहती थी। दिन बीतते जा रहे थे और उसकी तबियत भी बिगड़ती जा रही थी।अब ना तो उसको कोई सहारा था ना बेटे का पता ।

एक दिन बुढ़िया माँ भोर में अपने चबूतरे की सफाई कर रही थी। एकाएक, एक छोटा - सा बच्चा जो देखने में नौ-दस साल का मालूम होता है , वहां आकर बुढ़िया माँ के पास आकर खड़ा हो गया । तभी बुढ़िया के कानों में एक आवाज़ आयी -' माँ कुछ खाने के लिए है?" बुढ़िया ने अपनी कमजोर आँखों से सामने देखा और कहा -" नहीं बेटा अभी तो भोर हुई है कुछ बनाया ही नहीं सवेरे -सवेरे ।" फिर उसने बच्चे की तरफ देखा । वह बच्चा एक भिखारी था जिसने एक झोली हाथ में ली हुई थी । उसका रूप देख बुढ़िया को उस पर तरस आ गया और चाय के लिए जो मालकिन से दूध मिलता था वह उसे दे दिया । ऐसा वह रोज करने लगी। बच्चा रोज उस दूध को ले जाता और जाकर बाज़ार में बेच देता उससे मिलने वाले पैसों को अपने पास इकट्ठा करता रहता ।

कुछ समय बीत गया बुढ़िया अपने घर के दरवाजे पर दूध का गिलास लेकर खड़ी रही मगर उस दिन कोई नहीं आया । ना अगले दिन, ना उससे अगले दिन । अब वह पहले की तरह अपना जीवन बिताने लगी । समय अपनी रफ़्तार से चलता गया। बुढ़िया माँ अब बीमार रहने लगी । बच्चे के आ जाने से उसका मन बंट जाता था और वह उसमें अपने बेटे की झलक देख पाती । परन्तु अब उसके पास जीवित रहने के लिए कोई लक्ष्य नहीं था। अकेलेपन ने उसे घेर लिया । एक दिन उसे दिल का दौरा पड़ गया। पड़ोसी उसे हस्पताल तक ले गए । इलाज़ शुरु हुआ तो पता चला बहुत सारे पैसों की जरूरत पड़ेगी तभी इलाज़ संभव है। इतने सारे पैसे वो कहाँ से लाती वो तो बहुत गरीब थी। अचानक एक डॉक्टर आगे आया उसने कहा कि आज से माताजी का सारा खर्चा और इलाज़ का खर्चा मैं उठाऊंगा अब से ये मेरे साथ रहेंगी । यह सुनकर बुढ़िया चौंक गयी। और कहा बेटा तुम्हारा खूब आभार ! मुझे आज महसूस हुआ कि लोगों में दया की भावना आज भी मौजूद है। यह सुनकर डॉक्टर साहब ने कहा -" अरे ! नहीं माँ धन्यवाद तो मुझे आपका करना चाहिए" तभी बुढ़िया की साँसे थमने लगी और तभी डॉक्टर ने उनका इलाज़ करने की मंजूरी दी। और फ़ौरन उनका इलाज शुरु हुआ ।

तत्पश्चात, बुढ़िया माँ का इलाज़ सफलतपूर्वक समाप्त हो गया। अब वह स्वस्थ हो रही थी। वह डॉक्टर दिन रात उनकी सेवा करता रहता । अब वह स्वस्थ हो रही थी। एक दिन बुढ़िया ने उससे फिर पूछा बेटा तुम कौन हो? कहाँ रहते हो? डॉक्टर ने बुढ़िया माँ की तरफ देखा और मुस्कुराने लगा । तभी अचानक , उसका जरूरी फोन आया और वह जरूरी काम से अस्पताल चला गया ।

आखिर कौन था ये डॉक्टर? उसका बेटा? वो भिखारी लड़का? या कोई और ?

कहीं यह वह बच्चा ही तो नहीं?

शायद!!

कुसुम लता
प्रथम वर्ष

किताब होती!

काश मैं भी एक किताब होती,
पढ़ सकती में उसको की क्या होगा मेरा कल,
क्या पाना है मुझे क्या खोना पड़ता मुझे काश
मालूम होता मुझे,
काश मैं भी एक किताब होती,
कब मिलती मुझे खुशियां कब मेरे दिल का
इम्तेहान होता काश मालूम होता मुझे,
आग लगाती उन लम्हों में जब मेरी खुशियों में
आग लगी थी,
समेटती उन लम्हों को जब मेरी खुशियों में
हरियाली आई थी,
पढ़ सकती तुझे तो मुस्कुरा लेती पढ़ कर काश
दुबारा पढ़ पाती तुझे,
हिसाब लगाती उनका जिसने हर पल मेरा दिल
दुखाया,
साथ निभाती उनका जिसने मेरा साथ निभाया
काश जिंदगी पढ़ पाती तुझे,
काश मैं भी एक किताब होती!किताब होती!

पूजा
द्वितीय वर्ष

जिल्लत भरी जिंदगी

बेटा-बेटी के अंतर में ये दुनिया है अभी टिकी,
बेटे आगे बढ़ते रहे, पर बेटी पैसों पर बिकी।
आगे बढ़ना चाहते हैं हम पर क्यों रुक जाते हमारे कदम,
लोगों की तानाशाही के कारण या फिर खुद में ही नहीं है दम।
आंधी की तूफान है आई काले बादलों का घेरा है,
भेद-भाव में रहे फंसे हम, हमारे चारो तरफ ये घेरा है।
छोड़ दिया उन लोगो ने दुनिया जिनमे आगे बढ़ने की क्षमता न थी,
कुछ मां-बाप ने अपने बच्चों के ही जान ले लिए ,
क्या उनके मन में अपने बच्चों के प्रति ममता न थी।
बेटियां मां-बाप पर होती है बोझ,
बेटों के खातिर बेटियां मार खाती है रोज़, हर दिन देती है वह अपना
बलिदान, इसलिए हम मानते हैं उसे सच्चा इंसान।
जिंदगी है देन खुदा की जीने का हक मेरा है,
आगे बढ़ने की आशा है जगी खुशी का नया सवेरा है।
सहेंगे न किसी की कड़वी बातें अब हमें कुछ कर दिखलाना है,
इस जिल्लत भरी जिंदगी को दूर फेंककर हमें अपने लक्ष्य को पाना है।
इस जिल्लत भरी जिंदगी में पीछे छूट गए थे हम कभी,
अब अपने घर लौटेंगी तभी जब लड़कियों की महत्व को समझेंगे सभी।

काजल कुमारी
द्वितीय वर्ष

मैं हूं रखवाला

उम्मीदों की दरिया से निकल कर अपना सपना
किया मैंने पूरा बनकर अपने वतन का रखवाला!

छोड़ अपने मां का आंचल कसम खाई करूंगा
हिफाज़त भारत मां की, बढ़ाऊंगा शान अपने तिरंगे
की क्योंकि हूं मैं अपने वतन का रखवाला!

चाहे अब आए कितने भी दुश्मन भूलूंगा नहीं मैं
अपना वादा, कर हिफाज़त तेरी भारत माता मैं भी
अमर जवान कह लाऊंगा!

करके पूरा अपने देश का बदला विजय रथ पर मैं
चढ़ जाऊंगा पर विजय का पताका लहरा के अगर
मैं रणभूमि में तुम्हारी गोद में सो जाऊं तो तुम मुझे
तिरंगे से लिपटा देना ताकि में सुकून से सो जाऊं
क्योंकि कर लिया है मैंने अपना जीवन का लक्ष्य
पूरा बन गया हूं मैं इस देश का रखवाला ।

रिचा कुमारी
द्वितीय वर्ष

पाबंदियां

लड़की बड़ी हुई नहीं पाबंदियां ढेर हो गई।
कभी ये मत करो! तो कभी ये मत पहनो!
ये बात अंदर ही अंदर अन्धेर कर गई,
लड़की बड़ी हुई नहीं पाबंदियां ढेर हो गई।

लड़कों से बात मत करो,
रास्ते मे चलते दांत मत निकालो,
स्कूल, कॉलेज से सीधे घर आना,
ये बातें अब घर की दीवारों में गूंजने लग गई।
लड़की बड़ी हुई नहीं पाबंदियां ढेर हो गई।

सिर्फ पढ़ाई काम नहीं आएगी,
घर के सब काम सिख ले,
नहीं तो ससुराल वाले ताना हमें मारेंगे,
ये सुन-सुनकर वो सुखी बेल हो गई,
लड़की बड़ी हुई नहीं पाबंदियां ढेर हो गई।

कब इस समाज में परिवर्तन आएगा,
कब हम पर विश्वास आएगा,
और इन जंज़ीरों को तोड़ कर हमारा
भी आज़ाद इतिहास आएगा।

एकता
द्वितीय वर्ष

मुझे मेरी उड़ान दो

बंद है मन की खिड़कियाँ ज़रा हवा के झोंके उधार दो
मुझे बारिशों को जितना है मेरे पंखों को इक उड़ान दो

मेरे गाँव की गालियाँ बदल जायेगी शहर की सड़कों में
छोटे छोटे डिब्बे जो बदल जायेंगे मीनारों में

इक बाग सजाना है उमीदों का मुझे कुछ बीज उधार दो

अमावस है, काली घनी रात पूर्णिमा बहुत दूर खड़ी पर
हाथों में लेकर दिया मैं भी पथ पर चल पड़ी

खोजने जीत को

सुकूँ को, प्रीत को

बादलों के उपर से देखना है जहाँ मुझे समन्दर की
गहरायीओं से भी नीचे जाना है मुझे

प्रियांशी दुबे
द्वितीय वर्ष

मन में निश्चय है मंज़िल बस विजय है

बस कुछ वक़्त उधार दो मुझे मेरी उड़ान दो

हिंदी के धूमिल अस्तित्व को समेटने की आवश्यकता और उपाय

भाषा का हमारे जीवन में जो स्थान है, उससे हर कोई परिचित है। मानव जाति के लिए भाषा युग का सबसे बड़ा वरदान है। अपने अंतर्मन में उतपन्न हुए विचारों को सबके समक्ष रखने हेतु भाषा एक उन्नत माध्यम प्रदान करती है। आदि काल से ही समय-समय पर नई-नई भाषाओं की शुरुआत हुई और देखते ही देखते यह भाषाएं मानवीय समाज का एक अभिन्न अंग बन गईं। इसमें भारतीय समाज के उत्थान की परिचायक हिंदी भाषा के योगदान को स्मरण करने का दिवस है। हिंदी ने कालांतर से ही न केवल अपने रुप को उन्नत किया, अपितु इस भाषा ने एक सभ्य, संबल और सार्थक भारतीय समाज के निर्माण में अपनी शत प्रतिशत भागीदारी सुनिश्चित की।

भारतीय समाज में हिंदी का स्थान-
इसमें किंचित भी संदेह नहीं कि एक भाषा के रूप में हिंदी हम भारतीयों की सबसे बड़ी पहचान है। इसके साथ ही, यह भाषा हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, और परिचायक भी है। हिंदी विश्व की सबसे सरलतम, सहज एवं सुगम भाषा होने के साथ विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है। संसार में हिंदी का अध्ययन कर इसे समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित हैं। यदि हम आंकड़ो की बात करें तो मंदारिन एवं अंग्रेजी के बाद, हिंदी विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है।

भारत में यदि हम हिंदी भाषा की स्थिति की बात करें तो यह कुल ग्यारह राज्यों एवं तीन केंद्रशासित प्रदेशों की मुख्य राजभाषा है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल आबादी में से लगभग 41.03 प्रतिशत लोगों की मातृभाषा हिंदी है।

आंकड़ो से हम हिंदी भाषा के महत्व को समझ ही सकते हैं, परन्तु इसकी प्रासंगिकता को वृहद स्तर पर समझने हेतु हम भारतीय समाज के इतिहास की ओर यदि रूख करें तो तथ्य और भी अधिक रुप से स्पष्ट होंगे।

लगभग एक हज़ार वर्ष पुरानी इस भाषा का उत्थान विश्व की सबसे प्राचीनतम भाषा संस्कृत से हुआ। इसने सदैव समय तथा सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार अपने निर्माण को गति प्रदन की। साहित्य जगत में हिंदी ने अपने दो मूल स्वरूपों के सृजन का अनुसरण किया।

भारतेंदु हरिश्चंद्र के साहित्यिक युग में भाषा ने अपने ब्रज स्वरूप के माध्यम से लोगों के समक्ष लोकप्रियता हासिल की। जैसे-जैसे समय बीता और भाषा ने द्विवेदी युग में अपनी खड़ी बोली स्वरूप को ग्रहण किया जो आज भी हमारे समाज में अपनी बुनियादों को मजबूती से पकड़कर आगे बढ़ रही है।

हिंदी हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है। धार्मिक दृष्टिकोण से इस भाषा ने सदैव हमारी मूलभूत संस्कृति तथा मान्यताओं को संरक्षित रखने का प्रयास किया। हिंदी साहित्य जगत में गोस्वामी तुलसीदास जी, रहीमदास, आदि कुछ ऐसे विशिष्ट व्यक्तित्व रहें जिन्होंने भारत की प्राचीनतम इतिहास एवं धर्म से संबंधित मान्यताओं को लोगों तक बिना किसी संकोच के पहुंचाने का प्रयास किया। गोस्वामी जी रामाधारा काव्यों का सृजन कर, भक्ति परंपरा में क्रांति की नई लहर उतपन्न की। धर्म तथा संस्कृति के संवाहक के रुप में यहां भी हिंदी ने एक उत्कृष्ट भूमिका निभाई।

मिटते अस्तित्व को समेटने की आवश्यकता तथा उपाय-

मगर, इतिहास निश्चित ही इस तथ्य पर आधारित नहीं कि आने वाले समय में भी सब कुशल हो। हिंदी का एक भाषा के रुप में जो उत्थान हुआ, उसे समाप्त करने में भी कोई क़मी नहीं की गई। आर्य समाज में पाश्चात्य संस्कृति के आगमन ने ही इसकी नींव रख दी थी। पराधीनता के कारण हमने जो आर्थिक और सामाजिक दंश झेला, उसने हिंदी के अस्तित्व पर भी एक गहरा प्रभाव डाला। अंग्रेजी भाषा की लोकप्रियता ने मानो किसी दीमक की भांति हिंदी की जड़ों को धीरे-धीरे समाप्त करना शुरु कर दिया। इन सबका एक दुखद परिणाम तब सामने आया जब स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीयों की सभा ने हिंदी को राष्ट्रभाषा का स्थान देने के विचार का विरोध किया।

भलें ही विरोधियों की संख्या मुट्ठी भर रही हो, मगर किसी भाषा के अस्तित्व के लिए इससे दुखद क्या हो सकता है? जिस समाज में इस भाषा ने अपना स्वरूप ग्रहण किया और बदले में विश्व स्तर पर भारतीयों की पहचान बनकर उभरी, उस भाषा को उसी देश के लोगों द्वारा बहिष्कृत किया जाना निश्चित रुप से भाषा के साथ अन्याय है।

सँभवत: हमें ऐसा लगता होगा कि हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिल जाना एक उचित विकल्प रहा हो, मगर आज भी परदेशी भाषा के समक्ष हमने अपनी मूल भाषा का जो हश्र किया है, वो अत्यंत दुखदायक है। हिंदी भाषा को पुनः स्थापित करने हेतु भारत सरकार द्वारा निश्चित तौर पर अब गंभीर रुप से प्रयास किए जा रहे हैं, समय-समय पर कार्यक्रमों का आयोजन, हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार, आदि ने इसमें एक अहम भूमिका भी निभाई है।

लेकिन यह पर्याप्त नहीं है हिंदी के उस सम्मान हेतु जिसकी परिकल्पना भारतवर्ष करता है। आज सोशल मीडिया भी बड़े माध्यम के रूप में उभरकर सामने आई है जहाँ हिंदी को उसका उचित स्थान प्रदान करने हेतु निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। आने वाले समय में हिंदी की लोकप्रियता में उत्थान होना निहित है और यदि प्रत्येक भारतीय इस संकल्प का निष्ठा से पालन करे तो वह दिन अधिक दूर नहीं जब हिंदी को एक भाषा के रुप में अपनी खोई हुई गरिमा पुनः प्राप्त होगी।

शान्या दास
द्वितीय वर्ष

हम एक साथ हैं

एक पल खूद को संभालती हूँ
सोचती हूँ की सही है हालात।
लेकिन अगले ही पल कुछ ऐसा हो जाता है
जो साबित कर देता है मुझको गलत।।
झकझोर देने वाली खबरें क्यूँ सुननी पड़
रही है आजकल ??
शायद यह हमारी कल की गलतियों की
सजा है जो हमे आज भुगतनी पड़ रही है।।
हर चेहरे की हसीं अंदर अनेकों दर्द समेटे है
आज के दौर में फिज़ा खुद में मौत लपेटे
है।
अब तो सर्वशक्तिमान ईश्वर का ही सहारा
है,क्योकिं इन्सान ने अपने ही हाथों अपना
आशियाना उजाड़ा है।।
संभल जाओ मानव जाति के लोगों
मत चढो झूठी शान की सीढ़ी पर
अरे!!
प्रकृति ही तो सब कुछ है कुछ तो छोड़ो
आने वाली पीढ़ी को।

हमने जो प्रकृति को सांसो से
मोहताज़ किया आज हम भी उन
सांसो के लिए मोहताज़ हैं
आओ ना फिर मिल कर एक
नयी शुरुआत करे
आओ कहे एक दुसरे से कि हम
एक साथ हैं
हम एक साथ हैं
हम एक साथ हैं ।

खुशी
द्वितीय वर्ष

लड़कियों का एक संघर्ष

कभी कभी सोचती हूं,
ज़हर खा लेने की धमकी देने वाली
लड़कियों के बारे में,
उन्होंने कितनी हिम्मत जुटाई होगी,
इस बात को कहने के लिए,
कहने से पहले,
कितनी ही बार, अपने मन में,
इस बारे में सोचा होगा।
इस भयानक कृत्य को
करते हुए पाया होगा।
इसके पहले उन्होंने,
अपनी कोई बात मनवाने के लिए,
अपनों से कितनी बार विनती की होगी,
गुहार भी लगाई होगी।
बार-बार कह-कहकर,
जब वो थक गई होंगी,
शायद उन्हें अपने लिए,
कोई दूसरा रास्ता नहीं दिखा होगा।
तब उन्होंने कहा होगा, कि
"मैं ज़हर खाकर अपनी जान दे दूंगी।"

फिर भी उन्होंने इतनी बड़ी बात कह दी,
शायद यह कहने से पहले,
वह अवसाद से भी गुजरी होगी,
और शायद यह कहने तक भी।

और यह बात कहने के बाद भी,
जब अपनों ने उसकी बात न मानी होगी,
तो वह सच में ज़हर खा लेती होंगी।
और खुद को खोकर,
एक दूसरी दुनिया में विजय मनाती होंगी।

या फिर वो ज़िद छोड़कर,
परिवार, समाज के सामने हारकर,
हार जाती होंगी।
और वो चुन लेती होंगी,
वो... जो वह नहीं चाहतीं।

इसमें भी जीत हुई,
लड़की की नहीं,
परिवार की, समाज की।

सोनम यादव
द्वितीय वर्ष

मैं कलरव हूँ

वो मुझे अपनी उन रूढ़ी बेड़ियों में जकड़ने की कोशिश करेंगे ,
मैं अपने ख्यालों के दम पर हर बार उड़ने की कोशिश करूंगी ।
वो अपनी विचारधाराओं से मेरे पंख कुतरने की कोशिश करेंगे ,
मैं अपनी उन्मुक्त कदमों से चलने की कोशिश करूंगी ।।
मैं कलरव हूं जनाब , मैं खुद से कभी ना रुकने का वादा करूंगी ।

वो अपनी निगाहों से मुझे जलील करने की कोशिश करेंगे ,
मैं अपने विश्वास से अपने कदमों की पकड़ को और मजबूत करती
आगे बढ़ूंगी ।
मैं कलरव हूं जनाब, मैं खुद से कभी ना झुकने का वादा करूंगी ।।
वो चाहेंगे मुझे अपनी बातों से गिराना ,
लेकिन मैं तब भी अपने साहस के दम पर पैरों में जकड़ी उन बेड़ियों से
एक पंछी की तरह उड़ने की कोशिश करूंगी ।
मैं कलरव हूं जनाब , मैं खुद से कभी ना नजरें चुराने का वादा करूंगी ।
वो बेबस कर देंगे मुझे अपनी ही निगाहों में झुकने को ,
लेकिन मैं तब भी निरंकुश होकर अपनी स्वाधीनता के लिए अपने
प्रयास जारी रखूंगी ।
हां मैं कलरव हूं जनाब उन खुले आसमानों में ऊंचाइयां छूने की कोशिश
करुंगी ।।

जिज्ञासा पाण्डेय
द्वितीय वर्ष

औरत हूँ मैं!

चुप रहूं मैं, सहू भी मैं
बोलू तो बदतमीज हूँ मैं,
क्योकि औरत हूँ मैं।
घुंघट करू मैं, सिर झुकाऊं मैं,
देखे कोई और तो बच्चलन हूँ मैं
क्योकि औरत हूँ मैं।
पढ़ी -लिखी मैं, समझदार भी मैं
पेशे से गृहनी हूँ मैं,
क्योकि औरत हूँ मैं।
पराए घर से मैं, पराए घर को आई
पर घर से बेघर हूँ मैं,
क्योकि औरत हूँ मैं।
बेटी मैं, पत्नी मैं, माँ भी मैं
पर हकीकत है बस,
सिर्फ एक औरत हूँ मैं,
क्योकि औरत हूँ मैं।
अखिल ब्रह्मांड मैं, समस्त कर्मकांड
भी मैं पर समस्त संसार से,
निरस्कृत हूँ मैं,
क्योंकि औरत हूँ मैं।
अंत भी मैं, आरम्भ भी मैं
पर फिर भी अपंग हूँ मैं,
क्योकि औरत हूँ मैं।

प्रेरणा झा
द्वितीय वर्ष

उलझन

किसे कहूं क्या सोच रहे हम
क्या कोई सही राह दिखाएगा ।
किसे कहूं क्या उलझन मन की
कौन समझ सुन पाएगा ।।
किसकी बीती सुनाए हम
क्या कोई आप बीती सुन पाएगा ।
मैं उलझी हूं खुदसे ही खुदमे
क्या कोई मुझे सुलझा पाएगा।।
खो गई हूं मैं इस अंधेरी दुनिया में
कोई मुझे नया सवेरा दिखाएगा।
मैं कही गुम सी हो गई हूं
क्या कोई मुझे खुदसे रूबरू कराएगा।।
क्या वो मेरी सभी उलझन दूर कर
मेरा पथिक बन जाएगा ।
हां है विश्वास आज इन सभी मुश्किलों
को दूर कर
कल मेरा भी नया सवेरा आएगा।।

नीकिता मिश्रा
द्वितीय वर्ष

आज़ादी का रंग

की अंदाज कुछ ऐसा जिसमे रंग
आज़ादी जैसा है
की सपनों के दरख्तो में कुछ हिस्सा तूफानों जैसा है
की हां झोली में फूल संग शहादत कफ़न जैसा है
की हां अंदाज़ कुछ ऐसा जिसमे रंग आज़ादी जैसा है
की वो जगह कोई नई नहीं पर नतीजा नया जैसा था
की हां सवेरा तो सुनहरा था पर शाम खूनी होली जैसी
थी
की हां अंदाज़ कुछ ऐसा जिसमे रंग आज़ादी जैसा था
की ख्वाहिश तो बस उन शहीदों जैसी थी
जहां फलक की दस्त पर जैसे तारों के साहिल सी
बिछी मंजिल है
की हां सुबकती रही हर जान जैसे पर वो
खून भी अब दब न सकी थी
की हां आंगन से निकलकर कफ़न तक चला है
रास्ते में खड़ी वो मजधर मिल गई जैसे
साहिल में उलझी कोई लहर को मिल गई रूह हो जैसे
की हां अंदाज़ कुछ ऐसा जिसमे रंग आज़ादी जैसा है

वैष्णवी राए
तृतीय वर्ष

कोरोना की दहशत (प्रकोप , कहर)

दहशत देख कोरोना की
थर - थर काँप उठती जनता,
'वैश्विक महामारी कोरोना'
का यह 'काल' विश्व पर आ धमका,

देख कोरोना को फैलाव,
जनता प्यारी हुई बेहाल,

जिसको जकड़े ये लक्षण,
खाँसी, बुखार , साँस में तकलीफ़,
सर दर्द, बदन दर्द, गले में दर्द,
वो हो जाएगा, इसको शिकार ।

तिल - तिल करके तड़पते हैं,
मन अशांत, देह से परेशान
भयंकर स्वप्न दिखलाता है,

कब तक, खैर मनाओगे,
लटक रही तलवार गर्दन पर,
कब तक, खैर मनाओगे |

'इम्यूनिटी' को मज़बूत कर,
जंग जीत जाएँगे।

सुरुचि
तृतीय वर्ष

युद्ध के दो हथियार,
मास्क और सैनिटाइजर
जो अपनाए इन साथी - संगी को
वह सुरक्षित रह जाएँगे।

जवान

हमने डरना कभी न जाना, आंधी से तूफान से,
देखो हम बढ़ते जाते हैं कैसे अपनी शान से।
कांटे आते उन्हें हटाते, तुरंत बनाते राह
बड़े-बड़े रोड़ो की भी करते न कभी परवाह
सर अपना ऊंचा रखतें हैं हरदम
हम अभिमान से
दिन में राह बनाता सूरज, फिर जब आती रात
चांद चांदनी बिखराता है करता हमसे बात है
हम इसे हरदम चलते हैं,राह देखते ध्यान से
मंजिल पर ही रुकना हमको हो कितनी भी दूर
लंबी राह नहीं कर सकती
हम कभी मजबूर
हमको अपनी मंज़िल प्यारी
ज्यादा अपनी शान से
हमने डरना कभी न जाना,
आंधी से तूफान से।
पैरों में छाले पड़ते हैं पर न टूटता ध्यान
हम प्रेरणा हरदम देता है मंज़िल का ज्ञान
जहां पहुंच जायेंगे हम यों चलते चलते आन से
हमने डरना कभी न जाना आंधी से तूफान से।

शिल्पा
तृतीय वर्ष

मैं एक कविता

मैं एक कविता हूं
वो कविता जिसको आप सभी जानते हैं ।
वो कविता जिसको लिखा भी जा सकता और पढ़ा भी।
मैं भी कविता हूं
जिसको न तो लिखा जा सकता है ना ही पढ़ा ।
इस मतलबी दुनिया का हिसाब ही कुछ ऐसा है।
कुछ कविता को चंद कागज़ के टुकड़ों पर लिखते है।
तो कुछ उसी कविता को चंद पैसों में खरीदते हैं।
दोनों ही कविता से खुशी तो मिलती है।
कुछ लोगों को लिखने और पढ़ने से
तो कुछ को लोगों को तन से

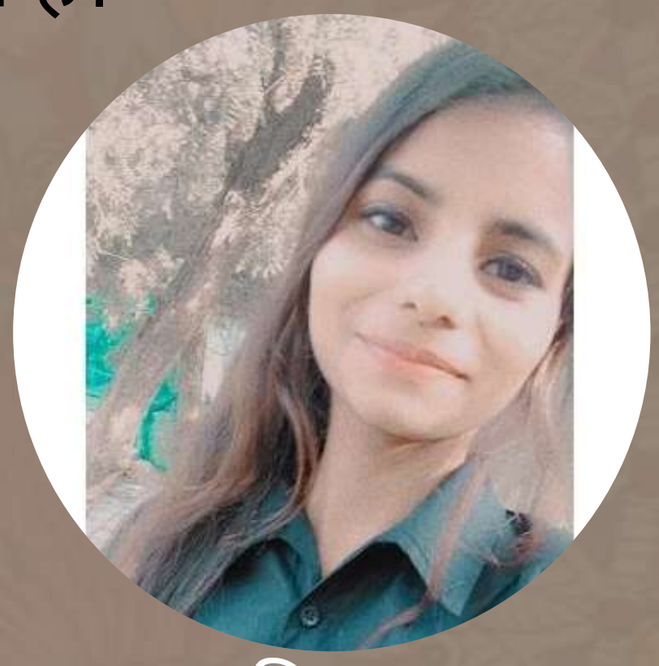

सृष्टि यादव
तृतीय वर्ष

क्या यह कविता आज वो कविता बन पाएगी
जिसको पढ़ कर आपको उसके बारे में पता चल सके।
जिसको पढ़ने के बाद पता लगे कि जिस
कविता को वो पढ़ रहे है।
आखिर वो कविता कौन है।
आज मैं उन सबकी आवाज़ बन कर यहां खड़ी हूं ।
क्या मैं भी एक कविता बन पाऊंगी
मैं एक कविता।

जब होंगे ख्वाब एक!

तुझे मैं कर सकूं शामिल
मुझे बनाना है इतना काबिल,

ख्वाब देखे है जो तूने
ख्वाब देखे हैं जो मैंने

जब होंगे ख्वाब एक।

कभी लड़खड़ाता है मन
तो डोलता है आत्मविश्वास

फिर दृढ़ कर संकल्प
चली मैं वह राह
न चली जिसपर कभी मैं
चली उस डगर पर
जहां के रास्ते अनजान
बनाने एक नया पहचान मैं
पाऊंगी क्या तुझे
हां पाऊंगी अस्तित्व अपना

जब होंगे ख्वाब एक!

सुमन
तृतीय वर्ष

गणतंत्र दिवस

चलो चलो हम आज़ादी की खुशियाँ मनातें हैं
चलो चलो हम सब मिलकर गणतंत्र दिवस
मनाते हैं।
तिरंगे को खुशी-खुशी लालकिले पर लहराते हैं
चलो चलो हम अपने शहीदों का मान बढ़ातें हैं।
कदम कदम हमने मुश्किलें हैं देखी तब जाकर
हमने आज़ादी पाईं है।
अंबेडकर ने हमको जोड़ा है एक साथ तब
जाकर संविधान की कड़ी से कड़ी बनाई है।
चलो चलो हम आज़ादी की खुशियाँ मनाते है।
आज हम संविधान का 72 वाँ जन्म दिन मनाते
है।
हम आपस में भूल सब बेर भाव एक जुट
होकर खुशियाँ मनाते है।
चलो आज हम भारत माँ के छोटे छोटे बच्चे
बन जाते है।
इसकी धूल मिट्टी में खेल हम बड़े हुए आज
इसकी हर बात याद लाते है,
चलो चलो हम आज़ादी की खुशियाँ मनाते हैं।
हम इसकी रक्षा के लिए अपने प्राणो की
आहुति भी डाल दे तो भी हम इसका कर्ज़ नहीं
उतार पायेंगे,
चलो चलो आज हम आज़ादी की खुशियाँ
मनाते है।
भूल जात पात सब हम एक जुट हो देश के
चारों कोनो को मिलाकर हम स्वर्णिम बनाते है,
तिरंगे की बुलंदी को हर कोने कोने में पहुंचाते
हैं ।
चलो चलो हम आज़ादी की खुशियाँ मनाते है।

आयशा खान
तृतीय वर्ष

बलात्कार

हर बार जब बलात्कार की ख़बरें सामने
आती हैं,
जिस्म तो जिस्म अंदर तक रूह भी कांप
जाती है,
ना अंदाजा लगाया जा सकता है उस
बच्ची के दर्द का,
ना उन दरिंदों की दरिंदगी की
कोई सीमा समझ आती है,
एक मासूम बच्ची किसी के हबस का
शिकार हो जाती है,
समझ नहीं आता कैसे एक इंसान हैवान
हो जाता है,
कैसे कोई हैवानियत मासूमियत को रौंद
जाती है,
कैसे इन हैवानों, दरिंदों को रातों में नींद
आ जाती है,
क्यों इनकी रूह इन्हें जलाकर ख़ाक नहीं
कर पाती है।
हर बार जब बलात्कार की ख़बरें सामने
आती हैं,
जिस्म तो जिस्म अंदर तक रूह भी कांप
जाती है,

साक्षी मिश्रा
तृतीय वर्ष

डर

डर से मत डर, कुछ अलग कर
गरीब कभी ऑफिसर नही बन पायेगा,
डर तुझे यही समझायेगा,
पर तू आत्मविश्वास दिखायेगा
डर से आँख मिलायेगा,
डर से सामना कर
डर से मत डर, कुछ अलग कर
जिंदगी के हर मोड़ पर तुझे डर सताएगा,
और उसी डर का फायदा बिना चूके डर उठायेगा,
तुझसे कहेगा कि तू कुछ नही कर पायेगा,
क्या वो लिखकर दे पायेगा, कि तू हार जायेगा,
डर से मत डर, कुछ अलग कर|

तान्या सिंह
तृतीय वर्ष

खुश रहो

छोटी सी है जिन्दगी
हर बात में खुश रहो
जो छूट गया उसका क्या मलाल
हासिल है जो, उससे सवाल किया करो
जो चेहरा पास न हो
उसकी आवाज़ मे खुश रहो
बहुत दूर तक जाते है यादों के काफ़िले
पुरानी टूटी यादों मे सुबह से शाम न किया करो
कोई रूठा हो आपसे उसके अंदाज मे खुश रहो
ऐसा काम किया करो जिस पर गर्व दिखाई दे
इतनी खुशिया बाँटो सबको
हर दिन पर्व दिखाई दे
जो लौट कर नही आने वाले उनकी याद मे खुश रहो
खुबसूरत है जिन्दगी बस इतना ख्याल कर
रख खुशी का हर पल तस्वीर मे ढाल कर
वसंत के बाद पतझड़ भी आना जरूरी है
खुशियों के बीच मिलते गम का न मलाल किया करो
कल किसने देखा अपने आज मे खुश रहा करो

मायना
तृतीय वर्ष

आयु में परिवर्तन और मेरे माता पिता

कितनी उम्र हो गई होगी आपके पिताजी की ,
यह सुनकर मेरी आंखों में अश्रु उतर आते हैं,
और यह सिलसिला चलता ही जा रहा है,
जिसे मैं चाह कर भी रोक नहीं सकती ,
35 40 47.....
चाहती हूं मेरे माता-पिता सदैव प्रौढ़ावस्था में बनी रहे,
मगर वृद्धावस्था उन्हें पकड़े आगे बढ़ी जा रही है,
जिनकी उंगलियां थाम कर मैंने चलना सीखा,
उनके पैरों का शिथिल हो जाना कितना दुखद है,
पर उनके अधरों पर एक मुस्कान सदा रहती है ,
कारण उनकी वृद्धावस्था के साथ पग मिलाकर आरंभ होती है
मेरी प्रौढ़ावस्था,
हां जानती हूं मृत्यु शाश्वत सत्य है, व्यक्ति का जन्म लेना फिर
शैशवावस्था ,बाल्यावस्था ,
फिर किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था,
वृद्धावस्था और फिर मृत्यु,
आयु में परिवर्तन संसार का नियम है,
मगर मेरा पुत्री मन इसे स्वीकारना नहीं चाहता।।

नीता पाल
तृतीय वर्ष

हिंदी साहित्य परिषद द्वारा आयोजित ऑनलाइन कार्यक्रमों की कुछ उम्दा तस्वीरें

संपादक मंडल

बबली शर्मा

अस्मिता सुमन

सुमन

शिवानी गुसाईं